HISTORY, B.A. Hons. II - PAPER II

DEFECTS OF VIENNA CONGRESS (विएना कांग्रेस के दोष)

'नैतिक व्यवस्था का पुनर्निर्माण', 'यूरोप की राजनीतिक व्यवस्था की पुनःस्थापना,' 'राजनीतिक शक्ति के न्यायोचित पुनर्विभाजन पर आधारित स्थायी शक्ति' आदि महान उद्देश्य एवं आदर्शों की घोषणाओं के साथ विएना कांग्रेस का प्रारम्भ हुआ था। यूरोप की जनता को इस सम्मेलन से बहुत आशाएं थीं, किन्तु कांग्रेस के निर्णयों ने सभी को निराश किया। इसी कारण विएना कांग्रेस की कटु आलोचना की गयी है। विएना कांग्रेस के निर्णयों में निम्नलिखित प्रमुख दोष थे, :-

(i) राष्ट्रीय भावनाओं की पूर्ण उपेक्षा :- विएना कांग्रेस की आलोचना किये जाने का प्रमुख कारण इसके द्वारा राष्ट्रीयता की भावनाओं की उपेक्षा किया जाना था। विएना के प्रतिनिधियों ने अपनी इच्छानुसार यूरोप की पुनर्व्यवस्था की, मानो वह उनकी व्यक्तिगत सम्पत्ति हो। बेल्जियम एवं हॉलैण्ड, जो भाषा, धर्म एवं संस्कृति प्रत्येक दृष्टि से पूर्णतया भिन्न थे, उनको फ्रांस की महत्वाकांक्षाओं को रोकने के लिए एक कर दिया गया। इसी प्रकार नार्वे को डेनमार्क से छीनकर स्वीडेन को दे दिया गया। पोलैण्ड को भी विभाजित कर उसकी राष्ट्रीय भावनाओं पर कुठाराघात किया गया। इटली को तो एक भौगोलिक अभिव्यक्ति (Geographical Expression) के रूप में परिणत कर उसके एकीकरण की सम्भावनाओं पर चोट की गयी। हेजेन के शब्दों में "विएना कांग्रेस अभिजातवर्गीय लोगों का सम्मेलन था, वे लोग राष्ट्रीयता और लोकतंत्र के उन आदर्शों को समझने में असमर्थ थे अथवा उनसे घृणा करते थे।"

(ii) प्रतिक्रियावाद का प्रभुत्व :- विएना कांग्रेस मेटरनिख की अध्यक्षता में सम्पन्न हुई थी। मेटरनिख घोर प्रतिक्रियावादी व्यक्ति था अतः इस कांग्रेस के निर्णयों पर प्रतिक्रियावाद का प्रभाव होना स्वाभाविक ही था। कैसलरे के उपस्थित रहने के कारण यद्यपि प्रतिक्रियावादी एवं प्रतिशोधात्मक नीति पूर्णतया तो मेटरनिख न अपना सका, किन्तु फिर भी इसके निर्णयों पर प्रतिक्रियावादी शक्तियों की अमिट छाप थी। कांग्रेस का विचार था कि स्थायी शान्ति प्राचीन राजवंशों की पुनर्स्थापना से ही संभव थी, तर्कहीन एवं प्रतिक्रियावादी था। इटली को छोटे-छोटे राज्यों में विभाजित कर उन्हें आस्ट्रिया के संरक्षण में देना प्रतिक्रियावाद का दूसरा उत्कृष्ट उदाहरण है। इस प्रकार पुरातन एवं नवीन विचारों के संघर्ष को विएना कांग्रेस समाप्त करने में असफल रही।

(iii) जन एवं क्रांतिकारी भावनाओं की अवहेलना :- विएना कांग्रेस की एक गलती यह भी थी कि उसमें क्रांतिकारी एवं जनता की इच्छाओं

→

की ओर कोई ध्यान न दिया। जनता के साथ उन्होंने शिशुवत व्यवहार किया। उनका विचार था कि ईश्वर ने उनको इसलिए नियुक्त एवं अभिषिक्त किया है कि वे विश्व को अपने संरक्षण में रख सकें और अपनी बुद्धि और अनुभव के अनुसार उनके जीवन का संचालन करें। वियना कांग्रेस ने फ्रांस की क्रांति से उत्पन्न स्वतंत्रता, समानता एवं भ्रातृत्व के सिद्धांतों की भी अवहेलना की, जो कि दिन-प्रतिदिन प्रबल होते जा रहे थे। उन्होंने सम्पूर्ण यूरोप को प्रभावित किया था तथा कालांतर में जो विश्व पर छा गये। केटेल्बी ने इस विषय में लिखा है, "इस प्रकार उन्होंने (वियना कांग्रेस के प्रतिनिधियों) गतिशील सामाजिक विचारधाराओं के विरुद्ध कार्य किया। इसी कारण शताब्दी के समाप्त होने के पहले ही उनके निरीक्षण निरर्थक हो गये।"

(iv) अन्य दोष :- इसके अतिरिक्त भी वियना कांग्रेस ने अनेक भूलें कीं। यूरोप में अशांति फैलाने का मुख्य उत्तरदायित्व फ्रांस पर था, किन्तु इस कांग्रेस से वास्तविक हानि फ्रांस को नहीं वरन् छोटे राज्यों को हुई जिनके हितों पर तुषारापात किया गया। कांग्रेस ने पक्षपातपूर्ण नीति अपनाते हुए कुछ राज्यों को वंशगत कारणों से अधिक भू-भाग दिया तथा कुछ को दिये गये वचनों को भी याद न रखा, जैसा कि हैनोवर, डार्मस्टट एवं इटली के कुछ राज्यों के साथ किया गया। जिनोवा को स्वतंत्र करने का वचन देकर भी सार्डीनिया के अधीन करना कांग्रेस की पक्षपातपूर्ण नीति का द्योतक है। इसके अतिरिक्त वियना कांग्रेस ने अनेक कार्यों को अधूरा छोड़ दिया। उदाहरणार्थ, यूरोप में स्थायी शान्ति स्थापित करने के उद्देश्य से सात राज्यों ने 'कांग्रेस के अंतिम अधिनियम' पर हस्ताक्षर किये थे तथा एक 'गारन्टी की संधि' (Treaty of Guarantee) जिसका कैसलरे ने प्रस्ताव रखा था, थे कभी कार्यान्वित न किया जा सका। पूर्वी समस्या आदि की ओर भी वियना कांग्रेस ने कोई ध्यान न दिया। इसी प्रकार मोडेना एवं टस्कनी में हैप्सबर्ग वंश की स्थापना की गयी, जो कि अत्यंत अत्याचारी एवं प्रतिक्रियावादी वंश था।

अतः स्पष्ट है कि वियना कांग्रेस के निर्णयों में अनेक दोष निहित थे। यही कारण था कि वियना कांग्रेस के निर्णय अधिक समय तक कायम न रह सके। 1830 ई० तक वियना कांग्रेस की व्यवस्थाएँ चलती रहीं, परन्तु 1830 ई० में फ्रांस में पुनः क्रांति हुई, किन्तु अन्य देशों के प्रतिक्रियावादी प्रतिनिधियों ने इसे दबा दिया। 1848 ई० में फ्रांस में पुनः क्रांति हो गई जिसने प्रबल प्रतिक्रियावादी मेटरनिख की शक्ति

→

की नींव हिला दी। धीरे-धीरे यूरोप के राष्ट्रों में राजनीतिक चेतना का आविर्भाव हुआ, परिणामस्वरूप विएना कांग्रेस की व्यवस्था धीरे-धीरे भंग होने लगी। हालैण्ड एवं बेल्जियम मात्र 15 वर्ष तथा स्वीडन एवं नार्वे 10 वर्ष पश्चात ही अलग-अलग हो गये। इटली और जर्मनी भी 1870 ई. में स्वतंत्र एवं एकीकृत राष्ट्रों में परिणत हो गये। विएना कांग्रेस के निर्णयों के असफल होने का प्रमुख कारण यह था कि उसने नवीन सिद्धांतों की अवहेलना की तथा प्रतिक्रियावादी सिद्धांत को अपनाया। इसने इतनी समस्यायें हल नहीं की जितनी की उत्पन्न कर दी। यही कारण है कि विएना कांग्रेस की आलोचना ~~उपलेख~~ करते हुए हेजन ने लिखा है, "1815 ई. से अबतक का यूरोप का इतिहास विएना सम्मेलन की भारी भूलों को संशोधित करने का इतिहास है।"

S. V. [signature]
2.9.2020